अध्याय 1 : शोध की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

भारतीय इतिहास लेखन में दलितों की तरह स्त्रियों को भी दोयम दर्जे में रखा गया है। समाज के इन दो प्रमुख वर्गों को ब्राह्मणवादी एवं पुरुषवादी विचारधारा ने अपने हित के लिए धर्म ग्रन्थों जैसे मनुस्मृति, यज्ञवल्क्यस्मृति इत्यादि द्वारा बनाये गये रीति-रिवाजों द्वारा अपने अधीन बनाकर हजारों वर्षों से लगातार इनका शोषण किया जो आज भी जारी है। इन्हें हाशिये पर पहुँचाने में समाजशास्त्रियों एवं इतिहासकारों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा जिन्होंने सिर्फ पुरुष वर्ग एवं उच्च्च वर्गों को इतिहास में स्थान देकर इन्हें नज़रअंदाज़ कर दिया। 19वीं तथा आरंभिक 20वीं सदी के लगभग समस्त ऐतिहासिक सामाजिक एवं मानवशास्त्रीय अध्ययन गृहस्थ एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि पर आश्रित होने के बावजूद पुरुष केन्द्रित ही थी जबकि स्त्रियों की परिवार एवं समाज में भूमिका को कोई महत्व नहीं दिया गया। प्रागैतिहासिक काल में भी ये मुख्य भोजन संग्राहक होने के अलावा परिवार के पालन पोषण की ज़िम्मेदारी इनके कंधे पर ही थी। उत्पादन एवं पुनरुत्पादन के कार्य में लगी रहने के बावजूद पितृसतात्मक लेखन व्यवस्था ने इनके योगदानों को नज़रअंदाज़ कर दिया। हालाँकि आधुनिक और उत्तर आधुनिक काल में भारतीय समाज के इन दो प्रमुख वर्गों को खोयी हुई प्रतिष्ठा दिलाने में पेरियार, फुले और अम्बेडकर जैसे भुक्तभोगी लोगों ने एक ओर जहाँ दलितों की स्थिति सुधारने में बहुमूल्य योगदान दिया वहीं स्त्रियों की दशा सुधारने में राजा राममोहन रॉय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के अतिरिक्त सावित्री बाई फूले, पंडिता रमाबाई सरस्वती के रूप में महिलाओं का उद्धारक मिल गया जिन्होंने अपने अथक प्रयास से महिलाओं को उन सभी अधिकारों को दिलाने का प्रयास किया जिससे वे हजारों वर्षों से वंचित थी।

यहाँ एक प्रश्न उठता है कि जिस देश के एक बड़े समुदाय के धर्मग्रंथ **मनुस्मृति** एक ओर "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता"[1] की बात करते हैं, उसी देश में तुलसीदास रचित रामचरितमानस में यह भी वर्णन मिलता है "ढोल गंवार शुद्र पशु नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी" ।[2] यदि दोनों ग्रंथों के रचनाकाल की तुलना करें तो यह अन्तर लगभग 1500-2000 वर्षों का है, जिससे एक बात स्पष्ट होती है की संभवतः प्राचीन काल में भारतीय स्त्रियों की स्थिति अच्छी थी जब पितृसत्ता जैसी सामाजिक संस्था अपने शैशव काल में थी, लेकिन इस संस्था के पीढ़ी दर पीढ़ी विकास ने स्त्री समुदाय को हाशिये पर ला दिया। वैदिक काल हिन्दू महिलाओं के दृष्टिकोण से एक स्वर्णयुग का काल था, इसका सबसे अच्छा उदाहरण बृहदारण्यक उपनिषद में मिलता है जिसमे ऐसे धार्मिक कृत्य का उल्लेख मिलता है जिसका उद्देश्य विदुषी पुत्री प्राप्त करना था ।[3] ऋग्वेद की अनेक ऋचाएं लोपामुद्रा, विश्वारा, सिकता, घोषा आदि विदुषी स्त्रियों की रची हुई है ।[4] ऋग्वेद और अथर्ववेद में ऐसी कन्याओं का उल्लेख मिलता है जो पत्नी की इच्छा करनेवाले युवक के पास अपनी इच्छा से स्वयं जाती थी, इससे स्पष्ट होता है कि इस समय मातापिता अपने पुत्रियों के लिए उपयुक्त वर नही खोजते थे बल्कि कन्याएँ अपने लिए अपना वर स्वयं ढूंढती थी। ऋग्वैदिक काल में पत्नी को यज्ञ करने और आहुतियाँ देने का अधिकार था। वे रथों के दौड़[5] के अलावा सभा एवं समीति में भी सक्रिय रूप से भाग लेती थी ।[6] इस क्रम में **मोनिका सक्सेना** का मानना है कि ऋग्वैदिक काल में आर्थिक क्षेत्र से संबन्धित शब्दावलियों जैसे सिरी (महिला बुनकर) पेसस्क्री (बेल बूटे काढ़ने वाली महिला) बिदालकरी (बांस फाड़नेवाली महिला) उपलप्रक्स्नी (अनाज पीसनेवाली महिला) इत्यादि के प्रयोग इस ओर इशारा करती हैं कि इस काल में स्त्रियाँ

---

[1] Sen Satyendra Nath, 'Manusmriti' (English Translation) Chatopaddhyaay Brothers, Calcutta, 1976, Hymn No 3.56

[2] तुलसीदास , 'रामचरितमानस'

[3] स्वामी गंभीरानंद (अंग्रेज़ी में अनुवादित) 'बृहदारण्यक उपनिषद', अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2009 श्लोक 4 ,4 ,18

[4] त्रिवेदी रामगोविंद, (हिन्दी अनुवाद)'ऋग्वेद' 1. 17 ; 5,28, 8, 91,9 ,81

[5] वही, श्लोक X 59.10

[6] वही, श्लोक 1 167.3

सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों महत्वपूर्ण योगदान देती थी ।[7] प्रसिद्ध इतिहासकार **ए० एस० एलटेकर** के अनुसार "यदि कुछ अपवादों जैसे विवाह के दौरान जबरन बेचा जाना, अपहरण कर लिया जाना या जुए में अपनी पत्नी को दांव पर लगाना इत्यादि को छोड़ दिया जाए तो वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति संतोषजनक थी। लड़कों की तरह लड़कियों का भी उपनयन संस्कार कर शिक्षा दी जाती थी, इनमें से अनेक अत्यधिक शिक्षित होकर वैदिक ऋचाओं का भी संकलन किया। यही कारण है की सम्पूर्ण वेदों की लगभग 1000 ऋचाएँ इनके द्वारा संकलित मानी जाती है। 16 या 17 वर्ष की अवस्था में इनका विवाह किया जाता था। सामाजिक धार्मिक समारोहों में भाग लेने के अतिरिक्त पूरे समाज में ये स्वछंद रूप से विचरण करती थी। परिवार में इनका सम्माननीय स्थान होता था। सैद्धान्तिक रूप से स्त्री गृहस्थ की पत्नी होने के कारण परिवार की मुखिया होती थी। हालांकि ऐसा प्रयोगिक रूप से कहीं देखने को नहीं मिलता ।[8] इस काल के अंत तक परिवार के सभी कार्यों की देखभाल पत्नी स्वयं करती थी, घर के दासों और नौकरों पर पूर्ण अधिकार रखने के अतिरिक्त वृद्ध सास-श्वसुर, देवर-ननद सभी पर उसका नियंत्रण रखते हुए उनका ख्याल रखती थी। इस काल तक सती प्रथा या पर्दा प्रथा जैसे कुरीतियों के कोई उदाहरण देखने को नहीं मिलते फिर भी इनके सभा में भाग लेने पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

अथर्ववेद के एक श्लोक से स्पष्ट होता है कि ब्राह्मण ग्रंथों के रचनाकाल से स्त्रियों की स्थिति में कुछ गिरावट आई। ऋग्वैदिक काल की अपेक्षा इस काल में इनके शैक्षणिक स्थिति में गिरावट दर्ज़ किया गया। शैक्षणिक केंद्र जंगलों में स्थित होने के कारण इनके आने जाने में कठिनाई महसूस होने लगी जिससे कि अब इन्हें नजदीकी संबंधियों जैसे पिता, भाई या चाचा के द्वारा घर पर ही शिक्षा दिया जाने लगा। परिणामस्वरूप उच्च, धनी एवं सुसंस्कृत परिवारों

[7] Saxena Monika, 'Ganikas in Early India', Page no. 3

[8] Altaker A.S, 'The position of Women in Hindu Civilization' in Kumkum Roy's "Women in Early Indian Societies" Manohar publications, Delhi 2005, page

को छोड़कर मध्य तथा निम्न वर्ग कि स्त्रियाँ अब शिक्षा, धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों से दूर होने लगी। समय दर समय ये उन सभी याज्ञिक कर्मकांडों से दूर होती चली गयी जिन्हें कभी ये गृहस्थ कि पत्नी के रूप में अंजाम देती थी जिससे इनका स्थान धीरे धीरे पुरुषों ने ले लिया। इस काल में स्त्रियों का जुए और शराब के साथ वर्गीकरण किया जाने लगा।[9] वे अब पति के बाद भोजन करती थी, उस स्त्री को अच्छा समझा जाता था जो पति को प्रत्युत्तर नही देती थी।[10] स्पष्ट है कि ब्राह्मण ग्रंथों के रचनाकाल से इनकी स्थिति में गिरावट आनी शुरू हो गयी क्योंकि इस काल में धार्मिक क्रियाओं में जटिलता आने से इसे पुरुष अंजाम देने लगे, अब सिर्फ धार्मिक कृत्यों में पति के साथ पत्नी की केवल उपस्थिति आवश्यक समझी जाने लगी, कालान्तर में उनका स्थान पुरोहितों ने लेना शुरू कर दिया। केवल अश्वमेध, बाजपेय तथा राजसुय यज में पत्नी का सम्मिलित होना अनिवार्य रह गया, यहीं से धार्मिक क्रियाओं में जटिलता आने से धीरे धीरे स्त्रियों का कार्य क्षेत्र सीमित होता गया और पितृसत्ता जैसे संस्था को प्रश्रय मिला।

वैदिक काल से ही यज्ञ करना आर्यों के सामाजिक एवं धार्मिक जीवन का एक प्रमुख हिस्सा बन गया जिसका विस्तृत वर्णन हमें ऋग्वेद सहित सभी वेदों में देखने को मिलता है। वैदिक संस्कृत भाषा की कठिनता को देखते हुए इनके कर्मकांडों को सरलता प्रदान करने के उद्देश्य से ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना की गयी। प्रत्येक वेद का अलग अलग ब्राह्मण ग्रंथ होता था। उत्तर वैदिक काल में वेदों को और सरलता पूर्वक समझने के लिए इसे 6 अंगों में बाँट दिया गया जिन्हें वेदांग के नाम से जाना जाता है - ये वेदांग हैं शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद एवं ज्योतिष। इन छह वेदांगों में से कल्प वेदों का एक महत्वपूर्ण अंग है जिसमें इसके समस्त याज्ञिक कर्मकांडों का विस्तृत वर्णन देखने को मिलता है। कल्प के अंतर्गत मुख्यतः दो प्रकार

[9] Bashyaam, Vijayaraghvan, 'Taitrey Sanhita', Granth Script, Heritage India Educational Trust, Chennai, 2004, Hymn. No. 6 , 5 .8

[10] ऐतरेय ब्राह्मण, श्लोक 3, 24, 7

के प्रमुख यज्ञों जैसे श्रौत यज्ञ (घर से बाहर वृहत्त पैमाने पर आयोजित किया जानेवाला यज्ञ) एवं गृह्य यज्ञ (घर के अंदर ही गृहस्थ द्वारा गृहाग्नि में सम्पन्न किया जानेवाला यज्ञ) का वर्णन मिलता है। दोनों प्रकार के यज्ञों के विधियों को ग्रंथ रूप में संकलित किया गया है जिसे क्रमशः श्रौतसूत्र एवं गृह्यसूत्र के नाम से जाना जाता है। गृह्यसूत्र प्राचीनकाल से ही एक गृहस्थ के लिए सुखी जीवन जीने का मार्गदर्शक साहित्य रहा है। जिसमें यज्ञ के माध्यम से गृहस्थ के उद्देश्यों, इच्छाओं की पूर्ति के लिए अलग अलग अवसरों पर कामना पूर्ति करनेवाले देवताओं का गृहाग्नि में आहुती देकर आह्वान किया जाता था। ऋग्वैदिक काल में स्त्रियाँ इन याज्ञिक कर्मकांडों में सक्रिय रूप से भाग लेती थी लेकिन उत्तर वैदिक काल से ही इनकी सक्रियता कम होने लगी इसके पीछे के कारणों का वर्णन करते हुए **ए० एस० अलटेकर** *विष्णु पुराण* के 26वें अध्याय के एक श्लोक का उदाहरण देते हुए इसे अनार्य कन्या से जोड़ते हुए कहते हैं कि '1000-500 ई० पू० के बीच आर्यों का अनार्यों से वैवाहिक संबंध एक आम बात हो गयी। अतः अनार्य पत्नी, संस्कृत के ज्ञान के आभाव में आर्य पत्नी का स्थान नहीं ले सकती थी।

"द इनट्रोडकसन ऑफ द नॉन आर्यन वाइफ़ इंटू द आर्यन हाउसहोल्ड इज द की टू द जेनरल डेटेरियोरेसन ऑफ द पोजिसन ऑफ वूमेन देट ग्रेजुएली एंड इमपरसेप्टिब्ली स्टारटेड एट अबाउट 1000 बी. सी, एंड बिकेम क्वाइट मार्केड इन अबाउट 500 इयर्स . द नॉन आर्यन वाइफ़ विथ हर इग्नोरेंस ऑफ संस्कृत लेंगवेज़ एंड हिन्दू रिलीजियन, कुड ओब्वियसली नोट एंजॉय द सेम रिलीजियस पृविलेजेज़ एज़ द आर्यन कंसर्ट . एसोसिएसन विथ हर मस्ट हैव टेंडेड तो एफेक्ट द प्योरिटी ऑफ स्पीच ऑफ द आर्यन को-वाइफ़ एज़ वेल ."

["The introduction of the non Aryan wife into the Aryan household is the key to the general deterioration of the position of women that gradually and imperceptibly started at about 1000 BC, and became quite marked in about 500

years. The non-Aryan wife, with her ignorance of Sanskrit language and Hindu religion, could obviously not enjoy the same religious privileges as the Aryan consort. Association with her must have tended to affect the purity of speech of the Aryan co-wife as well."][11]

फिर भी संभवतः पति द्वारा आर्य पत्नी की अपेक्षा अनार्य पत्नी को ज्यादा मान-सम्मान दिये जाने (किसी गृहस्थ या राजा की सबसे प्यारी पत्नी ही याज्ञिक गतिविधियों में भाग ले सकती थी चाहे वो आर्य या अनार्य हो) लगा। याज्ञिक गतिविधियों से उनका जुड़ते चले जाना रूढ़िवादी पुरोहितों के लिए बिलकुल असह्य बात थी। अतः उन्होने स्त्रियों के वैदिक अध्ययन एवं धार्मिक कार्यों पर प्रतिबंध लगा दिया।

"वेरी ओफ़ेन द नॉन आर्यन वाइफ़ मे हैव बीन द फेवरेट वन ऑफ हर हस्बेंड, हू मे हैव ओफ़ेन अटेम्पटेड टू एसोसिएट हर विथ हिज रिलीजियस सेकृफाइस इन प्रीफेरेंस टू हर बेटर एडुकेटेड बट लेस लव्ड आर्यन को-वाइफ़ . दिस मस्ट हैव नेचुरली लेड टू ग्रेव मिस्टेकस एंड एनोमलीज़ इन द परफोरमेंस ऑफ द रिचुअल, विच मस्ट हैव शोक्ड ओर्थोडोक्स प्रीस्टस। द फर्स्ट रेमेडी दे मस्ट हैव थाउट ऑफ वाज़ टू डिक्लेयर द नॉन आर्यन वाइफ़ टू बी अनफ़िट फॉर एसोसीएसन विथ हर हसबेंड इन रिलीजियस रिचुअलस . द ब्लैक नॉन आर्यन वाइफ़ मे बी हर हसबेंड'स एसोसिएट इन प्लेजर बट नॉट इन रिलीजियस रिचुअल्स'- (विष्णु पुराण अध्याय 26)

इवेनचुअली इट वाज़ फेल्ट देट द ऑब्जेक्ट कुड बी गेण्ड बाइ डेक्लेयरिंग द होल क्लास ऑफ वुमेन टू बी इन एलीजिब्ल फॉर वेदिक स्टडिज एंड रिलीजियस ड्यूटिज . देयर वुड देन बी नो कोश्चनऑफ रिजेक्टिंग एड्मिशन टू ए नॉन आर्यन वाइफ़ एंड ग्रांटिंग इट टू एन आर्यन वाइफ़ एंड ग्रांटिंग इट टू एन आर्यन अलोन; ऑल वुड बी इनएलिजीबल एंड नॉन नीड बी ओफ़ेंडेड।"

[11] Altaker A.S 'The position of Women in Hindu Civilization' Motilal Banarasidas, Delhi, 1987, Page No. 56